

विक्रम संवत्-२०३६, अषाढ वद-१५, रविवार, ता. १०-८-१९८०  
 पयनामृत-२१, ३०. प्रपयन नं. ३

चैतन्यको चैतन्यमेंसे परिणामित भावना अर्थात् राग-द्वेषमेंसे नहीं उदित हुई भावना-ऐसी यथार्थ भावना हो तो वह भावना इलती ही है. यदि नहीं इले तो जगतको-चौदह ब्रह्मांडको शून्य होना पडे अथवा तो इस द्रव्यका नाश हो जाय. परंतु ऐसा होता ही नहीं. चैतन्यके परिणामके साथ कुदरत बंधी हुई है-ऐसा ही वस्तुका स्वभाव है. यह अनंत तीर्थकरोंकी कही हुई बात है. २१.

२१. 'चैतन्यको चैतन्यमेंसे...' चैतन्य भगवान आत्मा ज्ञान और आनंदका कंद प्रभु वस्तु, अंतरमें अनंत गुण बसे हैं, ऐसी यह चीज-वस्तु है. उसकी यहां चैतन्य कला है. चैतन्यमेंसे 'चैतन्यको चैतन्यमेंसे परिणामित भावना...' अंतर चैतन्य स्वरूप, चैतन्य स्वरूपकी परिणत अंदर भावना वह निर्मल (है). जैसे चेतन है वैसा चैतन्य गुण है, ऐसी चैतन्यकी परिणति उत्पन्न हुई. ऐसी परिणति 'भावना राग-द्वेषमेंसे नहीं उदित हुई...' यह थोडा सूक्ष्म पडेगा. जिसे अंतर राग-द्वेषके बिना चैतन्यमूर्ति प्रभु, उसकी चैतन्यमेंसे चैतन्यकी भावना परिणामित हुई. आला..ला..! वह भावना, ऐसी यथार्थ भावना है. बाह्य कोई भी प्रपंच या विकल्पकी यहां अपेक्षा नहीं है. ऐसी भावना 'यथार्थ भावना हो तो वह भावना इलती ही है.' थोडी सूक्ष्म बात आयेगी.

चैतन्यमेंसे चैतन्यकी भावना जगृत हुई. और करना भी वही है. वह जो चैतन्यकी भावना परिणामित हुई, वह पूर्ण लोकर ही रहेगी. उसका इल पूर्ण ही आयेगा. 'यदि नहीं इले तो जगतको-चौदह ब्रह्मांडको शून्य होना पडे...' थोडी सूक्ष्म बात है. क्या कहते हैं? चैतन्यस्वरूप भगवान, उसकी चैतन्य भावना राग और द्वेष बिनाक, वह भावना इले नहीं, जगतमें यदि वह भावना न इले.. आला..! तो जगतको चौदह ब्रह्मांडको शून्य होना पडे. क्या कहते हैं? आला..! वास्तविक जिसे अंदर चैतन्यकी भावना जगृत हुई है, उसे यदि चैतन्य पूर्ण प्राप्त न हो तो जगतो शून्य होना पडे. अर्थात् उस भावनाका इल नहीं आये तो वह द्रव्य

ही नहीं है. सूक्ष्म बात है, भाई!

चैतन्यकी भावना न इले तो वह चैतन्य पूर्ण नहीं है यानी द्रव्य ही नहीं है. द्रव्य नहीं है तो जगतके द्रव्यका नाश होगा. थोड़ी सूक्ष्म बात है. आह्लाहा..! अपनी चैतन्यकी भावना यदि नहीं इले तो जगतको-यौदह ब्रह्मांडको (शून्य होना पड़े). अपनी भावना अंदरसे लुई और उसका परिणाम पूर्ण न हो तो जगतको शून्य होना पड़े. क्योंकि द्रव्य ही नहीं रहता. चैतन्यकी भावना है उसका इल द्रव्य पूर्ण, पूर्ण द्रव्यका इल है. यदि वह भावना न इले तो वह पूर्ण द्रव्य (परिणामनमें) आये नहीं. और पूर्ण द्रव्य न हो तो जगत शून्य हो जाये. थोड़ी अलग प्रकारकी बात है. आह्लाहा..!

अंतरमें भगवान चैतन्यमूर्ति प्रभु, चैतन्यकी भावना अंदर त्रिकावी, वह भावना न इले तो वह द्रव्य ही नहीं रहता. यानी भावना लुई और द्रव्य पूर्ण नहीं होता. पूर्ण नहीं हो तो जगतको शून्य होना पड़े. जगतके सभी प्राणी या जव, उसकी इल स्वरूप पूर्ण नहीं आवे तो उस तत्वको नाश होना पड़े. थोड़ी सूक्ष्म बात है. पंडितज! सूक्ष्म बात है.

बलिनके वचन हैं, अनुभूतिमेंसे निकले हैं. अंतर आनंदके अनुभवमेंसे बात आयी है, सूक्ष्म बात है. बहुत सादी भाषा है. लेकिन बात वह कहते हैं कि, यह प्रभु जो अंदर है, नित्यानंद नाथ, नित्यानंदके नाथकी भावना-राग और द्वेष बिनाकी, वह भावना यदि न इले तो द्रव्य ही नहीं रहता. द्रव्य नहीं रहता इसलिये जगत ही शून्य हो जाये. आह्लाहा..! समझमें आया?

‘वह भावना इलती ही है.’ पहले तो अस्तिसे बात की है. भगवान आत्मा अंदर चैतन्यको जगृत करके, जोकर श्रद्धा की, जिसने अंदर रागरहित भेदज्ञान प्रगट किया, वह पूर्णता प्राप्त न करे तो वह द्रव्य ही नहीं रह सकता. द्रव्य न रहे तो सब द्रव्यका नाश हो जाये. प्रत्येक द्रव्यकी भावना और पर्याय अंदर, उससे परिणतिकी प्राप्ति न हो तो वह वस्तु ही न रहे. आह्लाहा..! थोड़ी सूक्ष्म बात है. बलिनके अंदरके वचन हैं. आह्लाहा..!

पंचमकालके प्राणीको भी, वस्तु है उसे पंचमकाल या चौथा काल नहीं है. क्योंकि यह जो शास्त्र कले वह पंचमकालके साधुने और पंचमकालके जवके लिये कला है. चौथे कालके प्राणीको नहीं कला है. आह्लाहा..! यहां भी कोई जव जैसे निकले... आह्लाहा..! भगवान आनंदमूर्ति प्रभु भाव वस्तु अस्तिरूप (है), उसकी सत्ताका स्वीकार होकर जो मोक्षमार्गकी भावना प्रगट लुई, उस भावनाका इल मोक्ष न आवे तो

जगतको शून्य होना पडे. द्रव्य रह सके नहीं. आत्माकी भावनाका उतना जेरे आवे कि यह भावना इवे ही, केवलज्ञान लेकर रहे. आलाहा..! यह बात आङ्किकामें ली थी. आलाहा..!

‘थौदह ब्रह्मांडको शून्य होना पडे.’ अेक बात. अर्थात् जे द्रव्य है, उसकी भावना यथार्थ हो और वह द्रव्य इवे नहीं तो द्रव्यका नाश हो जाये. तो जगत शून्य हो जाये. आहा..हा..! ‘अथवा तो इस द्रव्यका नाश हो जाये.’ पहले पूरे जगतकी समुच्च्य बात की. द्रव्यकी भावना है और द्रव्य इवे नहीं तो उस द्रव्यका नाश हो जाये. क्योंकि भावनाका इव जे द्रव्य पूर्ण पर्याय, वह नहीं आवे तो वह भावना निष्कल गइ. भावना निष्कल गइ तो उसका इव भी नहीं मिलता. इसलिये उस द्रव्यका नाश हुआ. सूक्ष्म बात है, प्रभु! आलाहा..! थोड़ी सूक्ष्म पडे ऐसी बात है.

वह क्या? अपनी भावना अपनेको न इवे, उसमें जगतको (शून्य होना पडे)? आपू! प्रभु! उसमें वह बात है कि जे द्रव्य है, जे सत्ता स्वतंत्र है, उस सत्ताकी भावना करनेपर वह सत्ता पूर्णपने पर्यायपने न हो तो वह सत्ता ही नहीं रहती. वह सत्ता नहीं रहनेसे जगतके पदार्थ सत्तारूप है वह नहीं रह सकेंगे. आलाहा..! जेरे अंदरका (है). अप्रतिलत भावनाका यह इव है. जे यह भावना हुई तो आत्मा पूर्ण होकर ही रहेगा. उसमें विघ्न आनेवाला नहीं, भवे हम पंचमकालमें आवे. आहा..हा..! और वह भी शास्त्रमें कला है. उटवीं गाथा.

अबुद्ध था-अप्रतिबुद्ध था उसे समझाया. उटवीं गाथा. वह समझ और जैसे समझ, अप्रतिबुद्ध समझ. कोई कलता है कि यह समयसार मुनिके लिये है. उटवीं गाथामें तो अप्रतिबुद्धको कलते हैं. आहा..! वह अप्रतिबुद्ध समझ, उसे गुरुने बारंबार समझाया, समझकर उसे सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र हुआ. और कलते हैं, उसमें टीकामें पाठ है कि हमें जे यह प्राप्त हुआ है, उससे मैं व्युत नहीं होऊंगा. पंचमकालका प्राणी है और कलनेवाले पंचमकालके गुरु हैं, इसलिये हमारी दशा नीचे गिर जायेगी ऐसा है नहीं. उटवीं गाथामें है. वहां तो वहां तक कला है, हम सम्यग्दर्शन-ज्ञानसे व्युत होंगे ही नहीं. शंका नहीं होती. आहा..हा..! अंदरसे वह जेरे आना चाहिये. वह कोई बाह्य प्रवृत्ति और क्रियासे प्राप्त नहीं होता. आलाहा..! अंदरका जेरे, चैतन्यप्रभु पूर्ण भगवान पूर्णानंदका नाथ चैतन्य रत्नाकर, चैतन्यरत्नसे भरा आकर अर्थात् समुद्र, चैतन्य रत्नाकर भगवान, उसकी जिसे भावना हुई. पुण्य और पापके राग-द्वेषके भाव बिनाकी भावना हुई. आलाहा..! पुण्य और

पापकी विकारी भावना बिना चैतन्यकी भावना दुर्घ, वह चैतन्य इले ही. वह केवलज्ञान प्राप्त करेगा ही. और केवलज्ञान एवं पूर्णता न हो तो वह भावना निष्कल ज्ञाने और भावनाका इल निष्कल ज्ञाने तो द्रव्यका नाश हो ज्ञाने. आला..ला..! थोडा सूक्ष्म है. यह तो अंदरके ज्ञानकी बात है. आला..ला..!

भाववान आत्मा त्रिकावी भाव भगवानस्वरूप, सब भगवानस्वरूप ही है. आत्मा अक समयकी पर्यायके अलावा भगवानस्वरूप ही है. सब आत्मा, निगोदसे लेकर सब द्रव्य ज्ञे है वह तो त्रिकावी निरावरण ही है. अण्ड है, अविनाशी है. ऐसी चीजकी अंतर दृष्टि दुर्घ, ऐसी चीजकी अंतर भावना दुर्घ और आत्मा प्राप्त न हो, ऐसा तीन कालमें बनता नहीं. प्राप्त नहीं हो रहा है तो उसका कारण क्या? कारण यह है कि जितनी योग्यता उसे पकड़नेकी करनेकी चाहिए, उतनी योग्यताका अभाव है. आला..ला..!

भगवान आत्मा सच्चिदानंद प्रभु अनंत गुणका समुद्र वह तो है, अनंत गुणसागर है. उस चीजको पकड़नेमें आये, भावना हो, सम्यग्दर्शन-ज्ञान हो और केवलज्ञान न हो और पूर्ण द्रव्य पर्यायपने परिणामे नहीं, ऐसा तीन कालमें बनता नहीं. पंचम कालके प्राणीकी बात है. उटवीं गाथामें वह लिया है. अप्रतिबुद्ध था उसने समकित प्राप्त किया, वह कलता है, मेरा समकित अब गिरेगा नहीं. ऐसा पाठ है. उटवीं गाथा. भाई! अंतरकी चीज अलग है. बाह्य आचरणकी किया, वह सब बातें बाहरकी अलग है. आला..! दया, दान, प्रत, भक्ति भी जड है. आला..ला..!

मुमुक्षु :- हिन्दीमें.

उत्तर :- हिन्दीमें आया नहीं? जड है. दया, दान, भक्ति आदि परिणाम (जड हैं). क्योंकि उसमें चेतनका अभाव है. चेतनका अभाव है तो वह अचेतन ही है. और अचेतनकी जिसे प्रीति है, उसको चेतनकी प्रीति नहीं है. और जिसको चेतनकी प्रीति दुर्घ उसको पुण्य-पाप राग अचेतन है उसकी प्रीति रहती नहीं. जिसको आत्माका रस चढा, उसका रागका रस नाश हो जाता है. और रागका रस यहि रहे तो आत्माका शांतिका रस नाश हो जाता है. आला..ला..! समजमें आया?

यहां कलते हैं, 'यदि भावना नहीं इले तो जगतको-चौदल ब्रह्मांडको शून्य होना पड़े...' आला..ला..! अपना ज्ञे है. अपनी पर्यायकी भावनासे पर्यायवान पूर्णकी प्राप्ति न हो तो दुनिया नहीं रह सकती. क्योंकि भावनाका इल द्रव्य, वह द्रव्य नहीं आये तो जगतमें द्रव्य ही न रहे. आला..ला..! सूक्ष्म है, प्रभु! बात थोडी अंदरकी है. अनुभवकी बात है. आला..ला..! अक बात (दुर्घ).

‘अथवा तो ईस द्रव्यका नाश हो जाय.’ जिसकी भावना आत्माने की, आत्मा आनंदस्वरूप भगवान, उसका आनंद आया और पूर्ण प्राप्त न हो तो द्रव्यका नाश हो जाय. साधकका साध्य पूर्ण होगा ही. न हो तो साधकका नाश होनेसे साध्यका नाश होगा. आहा..हा..! ऐसी बात है, प्रभु! आत्माके बलकी बात अंदर है. यहां पंचमकावका अवरोध नहीं है. क्योंकि समयसार, प्रवचनसार, नियमसार आदि करनेवाले तो पंचमकावके साधु थे. और पंचमकावके श्रोताको समझते थे. ऐसा नहीं है कि यह बात चौथे कावकी है और पहले कावकी है और तीसरी है. काव आदि कुछ आत्माको अवरोध नहीं करता. आत्माको कोई अवरोध नहीं है. ऐसा भगवान अंदर सच्चिदानंद प्रभु, उसकी जिसको यथार्थ भावना हुई वह इले ही इले, परमात्मा होकर रहेगा. छूटकोको क्या करते हैं? परमात्मा थये (छूटको). (छूटकारा). हमारी भाषा छूटको है. परमात्मा हो जाय. अवश्य इलेगी. आहा..!

‘परंतु ऐसा होता ही नहीं.’ आहाहा..! पहली वह बात की. फिर (कहते हैं), ऐसा होता ही नहीं. बहिन रात्रिमें थोड़ा बोले होंगे, बहनोंने विभा लिया होगा. यह विभा लिया है. अनुभूतिमेंसे विभा गया है. आत्माका सम्यग्दर्शन और अनुभूतिमेंसे यह सब वाणी आई है. आहा..हा..! ‘ऐसा होता ही नहीं. चैतन्यके परिणामके साथ कुदरत बंधी हुई है...’ क्या करते हैं? चैतन्यका जो निर्मल परिणाम, उससे पूर्ण हो ऐसा द्रव्यका स्वभाव ही है. कुदरत उससे बंधी हुई है कि अपना परिणाम जो चैतन्य शुद्ध सम्यग्दर्शन, ज्ञान आदि शुद्ध परिणाम हुआ तो उसे पूर्ण परमात्मा होगा ही, कुदरत यानी द्रव्यका स्वभाव ऐसा है. वस्तुका स्वभाव ही ऐसा है. आहाहा..!

‘चैतन्यके परिणामके साथ कुदरत बंधी हुई है...’ कुदरतका अर्थ वह-द्रव्यका स्वभाव ही ऐसा है. द्रव्यका स्वभाव रहे नहीं. अपनी भावना हो और भाव न आये तो वस्तु रह सकती नहीं. कोई ऐसा करते हैं कि, हम महेनत तो बहुत करते हैं, लेकिन समझित क्यों नहीं होता? उसकी बात बूठी है. जितने प्रमाणमें अंतर्भुजमें प्रयत्न चाहिये, उतने प्रयत्नकी कमीके कारण आत्मा लथ नहीं आता. और कहे कि हम प्रयत्न बहुत करते हैं, लेकिन लथमें नहीं आता. वह बात बूठी है. पंडितजी! आहा..! हम तो बहुत महेनत करते हैं, लेकिन पत्ता नहीं लगता. उसका अर्थ ऐसा हुआ कि साधन तो बहुत करते हैं. साध्य प्राप्त नहीं होता. ऐसी बात कभी नहीं होती. आहा..हा..! जितने प्रमाणमें राग-द्वेष रहित चैतन्यकी सूक्ष्म परिणति स्वयंको पकड़नेको जितनी चाहिये उतनी न हो और पकड़में आवे,

ઐસા ત્રીન કાલમેં બનતા નહીં. ઔર ઉતની સૂક્ષ્મ પર્યાય પ્રગટ હુઈ હો ઔર પકડમેં ન આવે, ઐસા ભી કભી નહીં બનતા. સમજમેં આયા? અલગ બાત હૈ, બાપૂ!

મુમુક્ષુ :- કાલલબ્ધિકે બિના પુરુષાર્થ ક્યા કરે?

ઉત્તર :- કાલલબ્ધિ કોઈ વસ્તુ નહીં હૈ. ટોડરમલજીને ઐસા કહા હૈ. મૈં તો ઐસા કહતા હૂં, બહુત સાલસે, (સંવત) ૧૯૭૧કી સાલસે. ૭૧કી સાલસે. કાલલબ્ધિકી ધારણા કરની હૈ યા ઉસકા જ્ઞાન કરના હૈ? ક્યા કહા સમજમેં આયા? કાલલબ્ધિકો ધારણામેં ધારના હૈ યા કાલલબ્ધિકા જ્ઞાન કરના હૈ? જબ કાલલબ્ધિકા જ્ઞાન હોગા, દ્રવ્ય સ્વભાવકા જ્ઞાન હુઆ તો કાલલબ્ધિકા જ્ઞાન હોતા હી હૈ. ટોડરમલજીને લિખા હૈ. કાલલબ્ધિ ઔર ભવિતવ્યતા કોઈ વસ્તુ નહીં હૈ. ઐસા લિખા હૈ. વસ્તુ હૈ, અકેલી નહીં હૈ. અકેલી કાલલબ્ધિ નહીં હૈ.

કાલલબ્ધિકા જ્ઞાન કિસકો અંદર હોતા હૈ? કાલલબ્ધિ, કાલલબ્ધિ શબ્દકા રટન કર લે, ઉસકા ક્યા મતલબ હૈ? ઉસકી પ્રતીતિ કિસકો હોતી હૈ? કિ અપને દ્રવ્યકી ઔર જિસકી દષ્ટિ હો ઔર ચૈતન્યકા અનુભવ (હુઆ હો). કાલ, પુરુષાર્થ, સ્વભાવ, નિમિત્તકા અભાવ સબ આતે હૈં. પાંચો સમવાય એક સમયમેં હોતે હૈં. આહા..હા..! કઠિન બાત હૈ. પાંચ સમવાય હૈ ન? પાંચો સમવાય. ઉસ સમય પુરુષાર્થ દ્રવ્ય પર આયા, પર્યાય દ્રવ્ય પર ઢલ ગઈ, ઝુકી, પાંચો સમવાય હોંગે. ન હો ઐસા ત્રીન કાલમેં બનતા નહીં. વહ બાત તો યહાં ચલતી હૈ. આહા..હા..!

મુમુક્ષુ :- કુદરત બંધી હુઈ હૈ, ઐસા ક્યોં કહા?

ઉત્તર :- દ્રવ્યકા સ્વભાવ ઐસા હૈ. ભાવના હુઈ ઔર (ફલ ન આવે) તો દ્રવ્યકા નાશ હો જાય. ઈસલિયે કુદરતકા નાશ હો જાય. આહા..! સૂક્ષ્મ બાત હૈ, ભાઈ! કાલલબ્ધિકી બાત તો પહલેસે બહુત કહતે થે. મૈંને કહા થા ન? ૧૯૭૧કે વર્ષમેં, બારંબર ઐસા કહતે થે, કેવલજ્ઞાનીને દેખા હોગા ઐસા હોગા. કેવલજ્ઞાનીને દેખા હોગા વૈસા હોગા, અપને ક્યા પુરુષાર્થ કર સકે? અભી યહ કમબદ્ધકા આયા હૈ કિ કમબદ્ધમેં જબ હોગા તબ હોગા, હમ ક્યા પુરુષાર્થ કરે? આહા..હા..! કમબદ્ધકી બાત યહાંસે નિકલી હૈ ન. કમબદ્ધ કહાં થા?

દ્રવ્યકી પ્રત્યેક સમયમેં જો પર્યાય હોનેવાલી હૈ વહ હોગી. કમસર હોગી. આગે-પીછે ઈન્દ્ર, જિનેન્દ્ર બદલ સકે નહીં. જો દ્રવ્યકી જો સમયકી પર્યાય, ઉસ સમયકી વહી પર્યાય, દૂસરે સમયકી દૂસરી, તિસરે સમયકી તિસરી (હોગી). ઉસ પર્યાયકો બદલનેમેં ઈન્દ્ર, નરેન્દ્ર, જિનેન્દ્ર સમર્થ નહીં હૈ. યહ બાત ઔર એક યહ બાત-દોનોં બાત નહીં થી. સમયસારકી તિસરી ગાથા. એક દ્રવ્ય દૂસરે દ્રવ્યકો છૂતા નહીં.

अेक आत्मा परमाणुको छूता नलीं. परमाणु परमाणुको छूता नलीं. आला..ला..! यह परमाणु ँस परमाणुमें है. अेक परमाणु दूसरे परमाणुको छूता नलीं. प्रत्येकका स्वयत्तुष्यय अपनेमें अपने कारणसे परिणामता है. परकी अपेक्षा उसमें है नलीं. आला..ला..! कठिन बात है.

मुमुक्षु :- ँसका विश्वास कैसे ँ? परमाणु परमाणुको स्पर्शता नलीं.

उत्तर :- बिलकूल छूता नलीं. अेक परमाणु है (उस) दूसरा परमाणु (स्पर्शता नलीं). तीसरी गाथामें अैसा कहते हैं, समयसार. अेक द्रव्य अपने धर्मकी चुंभता है. देभना है? लिन्दी नलीं ँगा. गुजराती ँगा. 'सब पदार्थ अपने द्रव्यमें अंतर्मग्न रहनेवाले...' संस्कृत टीका है. संस्कृत टीकाका है. समयसार. 'सर्व पदार्थ अपने द्रव्यमें अतर्मग्न रहनेवाले अपने अनंत धर्मके चकको (समूलको) चुंभन करते हैं...' सर्व पदार्थ अपने गुण-पर्यायको छूते हैं. परमाणु या आत्मा, सर्व अपनी पर्यायको छूते हैं. 'स्पर्श करते हैं-तथापि वे परस्पर अेक दूसरेको स्पर्श नलीं करते,...' आला..ला..! यह बात गजब है! वीतरागके सिवा यह बात ँ नलीं सकती. अेक रजकण दूसरे रजकणको छूता नलीं. आला..ला..! ँस अंगूलीमें अनंत परमाणु है. अेक-अेक परमाणु दूसरे परमाणुको छूता नलीं. अपने परमाणुमें अपनी परिणति अपनेसे अपनेमें अपने कारणसे है.

मुमुक्षु :- यह तो निश्चयका कथन ँआ.

उत्तर :- निश्चय यानी सत्य. व्यवहार यानी उपचार.

मुमुक्षु :- ँसमें यह भी लिभा ँआ है कि अेक दूसरेका उपकार करते हैं.

उत्तर :- वह जूठी बात है. वह कला था. यौदह ब्रह्मांड लिभते हैं, फिर नीचे लिभते हैं, परस्पर उपग्रहो. अैसा लिभते हैं. उसका अर्थ सर्वार्थसिद्धमें अैसा किया है कि उपग्रहका अर्थ निमित्त है. कोर्ण दूसरेको उपकार कर सके अैसा है ँी नलीं. निमित्त (है). अैसी बात. अेक द्रव्यको दूसरे द्रव्य उपग्रह-उपकार करे, अैसा तीन कावमें है नलीं. उपकारका अर्थ वहां लिया है कि निमित्तकी उपस्थिति, उसका नाम उपकार कहनेमें आया है. निमित्त, ँ! निमित्त जगतमें तो ँता है. परंतु जब-जब जिस द्रव्यकी पर्याय ँनेवाली है, वह अपनेसे ँी ँती है. निमित्तमात्र दूसरी चीज भवे ँो. निमित्तको छूता नलीं. अेक द्रव्य दूसरे द्रव्यको कभी छूता नलीं. आला..ला..! अेक परमाणु दूसरे परमाणुको छूता नलीं. आत्मा कर्मको छूता नलीं. आला..ला..! बात सूक्ष्म है, भाँ!

यहां तो (संवत) १९७१से चल रहा है. कमबद्ध, कमबद्ध चलती है. अेकके

बाद अेक पर्यायि चले, उसकी दृष्टि द्रव्य पर जाती है. कमलद. कमनियमित शब्द है. 30८ गाथा. कमनियमित यानी सब बराबर. जिस समय जो पर्यायि होगी वह होगी, बादमें होगी, आगे-पीछे होगी ऐसा है ही नहीं. ऐसा वहां 30८ गाथामें है. ऐसा प्रश्न उठा था कि केवलज्ञानीने देखा वैसा होगा. अपने क्या पुरुषार्थ करें? यह १९७१-७२की बात है. मैंने एतना कहा कि, अेक समय, ज्ञानमें अेक समयमें तीन काव तीन लोक ज्ञानता है, अपनी पर्यायि द्रव्य-गुणको भी ज्ञानती है, वह पर्यायि लोकालोकको ज्ञानती है, वह पर्यायि अपनी बाहर अनंती पर्यायि प्रगट है उसको ज्ञानती है. ऐसी अेक समयकी पर्यायिकी सत्ताका स्वीकार करनेवाला, द्रव्य पर दृष्टि लुअे बिना स्वीकार नहीं होता. आहा..हा..! अेक समयकी केवलज्ञानकी अेक पर्यायिमें पूरी दुनिया है. क्योंकि उस पर्यायिमें लोकालोक ज्ञाननेमें आता है, द्रव्य-गुण ज्ञाननेमें आते हैं. अेक ही पर्यायि, दुनियामें अेक पर्यायि वस्तु, उसमें पूरे तीन काव तीन लोक ज्ञाननेमें आते हैं. ऐसी अेक समयकी पर्यायिकी सत्ता, एंस प्रकार अंदर विचार करके, नमन करके.. आहाहा..! भगवंत आत्माकी ओर जुककर निर्णयि करे, उसको सम्यक्दर्शन लुअे बिना रहे नहीं. आहा..हा..! समजमें आया? बडी बात है. सत्ताका स्वीकार (है)? केवलज्ञान, केवलज्ञान सब बोलते हैं, लेकिन केवलज्ञान कहना किसको? केवलज्ञानीने देखा वैसा होगा. लेकिन तुमको अभी केवलज्ञानकी श्रद्धा है या नहीं? बादमें देखा होगा वैसा होगा. केवलज्ञानकी सत्ताका स्वीकार करेगा उसकी दृष्टि ज्ञान पर जायेगी.

अपना स्वभाव चैतन्य आनंद प्रभु, उसकी दृष्टि जब केवलज्ञानकी सत्ताका स्वीकार करेगी, वहां अपनी सत्ताका स्वीकार किये बिना (उसकी सत्ताका स्वीकार होता नहीं). पर्यायिका निर्णयि पर्यायिसे होता नहीं. पर्यायिका निर्णयि द्रव्यके आश्रयसे होता है. सूक्ष्म लगे, भगवान! मार्ग यह है. तीन लोकके नाथ सीमंधर भगवान कहते हैं. आहाहा..! वह बात है. किञ्चित्मात्र ईरकार नहीं. आहा..हा..!

अेक समयकी सत्ता! कब बात है? एंस दुनियामें अेक समयकी पर्यायिकी सत्ता ऐसी अेक ही है. अेक पर्यायि केवलज्ञानकी अेक ही है. अेक समयकी अेक पर्यायिमें लोकालोक, द्रव्य-गुण-पर्यायि, द्रव्य-गुण, अपनी अनंती वर्तमान प्रगट पर्यायि सब ज्ञाननेकी ताकत अेक समयमें है. आहाहा..! अेक समयकी पर्यायिकी सत्ताका स्वीकार करने जाये उसकी पर्यायि पर दृष्टि नहीं रहेगी. आहाहा..! उसकी दृष्टि द्रव्य पर जायेगी. क्योंकि पर्यायिमें पर्यायिके आश्रयसे पर्यायिका निर्णयि नहीं होता. आहाहा..! सूक्ष्म है, भगवान! पर्यायिका निर्णयि द्रव्यके आश्रयसे होता है. आहाहा..! अंदर

तत्त्वकी मूल बात कम हो गयी और झंझार हो गया बहुत.

अक परमाणु दूसरे परमाणुको छूता नहीं. अक आत्मा अक दूसरेको, कर्मको छूता नहीं. आला..ला..! और प्रत्येक परमाणु और आत्मामें कमसर पर्याय होगी, आगेपीछे नहीं. लेकिन उस कमसर पर्यायका निर्णय करनेवालेकी दृष्टि द्रव्य पर जायेगी. द्रव्य पर जायेगी तो उसको समकित ही होगा. आला..ला..!

अैसे यहां जो बहिनने कहा है वह जोरवाला है. आला..ला..! अंतर स्वभावकी भावना, स्वभाववान प्रभु, उसकी भावना उसका इल न आवे तो उस वस्तुका नाश होगा. उस वस्तुका अस्तित्व नहीं रहेगा. उसका नहीं रहेगा तो पूरे जगतका अस्तित्व नहीं रहेगा. अथवा उस द्रव्यका ही नाश होगा. क्योंकि द्रव्यकी जो पूर्ण शक्ति है, उसकी प्रतीति और अनुभवमें भावना आयी, उस भावनाका इल पूर्ण द्रव्य न आवे तो उस द्रव्यका नाश होगा. सूक्ष्म बात है, भाई! यह आया है इसलिये थोडा कलते हैं. नहीं तो इतनी सूक्ष्म बात नहीं करते हैं. आला..ला..!

‘अैसा ही वस्तुका स्वभाव है.’ स्वभावकी भावना जो चैतन्यकी की, चैतन्य द्रव्य, उसकी भावना. अनंत गुणका पिंड, उसकी भावना अंदर लुई वह निर्विकल्प लुई. वह निर्विकल्प भावना रागरहित लुई. रागरहित लुई उस भावनासे केवलज्ञान अर्थात् पूर्ण दशा प्राप्त होगी, होगी और होगी ही. न हो तो द्रव्यका नाश हो जायेगा. द्रव्यकी स्थिति अैसी है नहीं. द्रव्यका साधन जिसने कहा, उसका साध्य आकर ही छूटकारा है. आला..ला..! समयसारमें उट गाथामें यह लिया है. अप्रतिबुद्ध समजा तो कलता है, अब मुझे छूटेगा नहीं. हमारी श्रद्धा, ज्ञान और अनुभवसे छूटेगा नहीं. पाठ है. संस्कृत टीका है. दरवीं गाथामें अैसा है, प्रवचनसार. हमने जो मार्ग अंदरसे प्राप्त किया है, उस मार्गसे कभी छूटेंगे नहीं, अ्युत नहीं होंगे. भले ही हम अकेले हों. आला..ला..! पंचम कावके श्रोताको भी इतना जोर आता है. धर्म कोई साधारण है? बापू! लोग साधारण माने कि दया पावी, व्रत लिये, पडिमा ले ली इसलिये हो गया धर्म. बापू! धर्म कठिन है.

सम्यग्दर्शन... आला..ला..! वह जब होता है तब यह सब ज्ञान होता है. यह हुआ तो परमात्मा होगा ही होगा. न हो तो द्रव्यका नाश होगा. द्रव्यका स्वभाव अैसा नहीं है. कुदरतमें द्रव्यका स्वभाव अैसा है कि साधकभाव हुआ तो साध्य प्रगट होगा ही. यहां अैसी बात ली है. अ्युत हो जायेगा, अैसी बात यहां नहीं ली है. आरलवें गुणस्थानसे अ्युत होता है न? वह बात यहां नहीं ली है. यह बात ली है.

यहां भी वह विया, 'ऐसा ही वस्तुका स्वभाव है. यह अनंत तीर्थंकरोंकी कही हुई बात है.' आला..ला..! थोड़ी सूक्ष्म बात आ गयी. 'यह अनंत तीर्थंकरोंकी कही हुई बात है.' चैतन्यके परिणाममें चैतन्यकी परिपूर्णाता न आये, ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने नहीं कहा है. अनंत तीर्थंकरोंने कहा है, भगवान् चैतन्य स्वरूप पुण्य और पापके विकल्पसे रहित, उसका अंदरमें अनुभव हो, दृष्टि हो, भावना हो. निर्विकल्प दशा हो और उसे निर्विकल्प परमात्मपद-साध्य प्राप्त न हो, (ऐसा) तीन कालमें बनता नहीं. समझमें आया? २१वां बोल पूरा हुआ. ३०. किसीने विभा है. इसमेंसे पढ़नेके लिये किसीने विभा है.

**जब बीज बोते हैं तब प्रगट रूपसे कुछ नहीं दिखता, तथापि विश्वास है कि 'ईस बीजमेंसे वृक्ष उगेगा, उसमेंसे डालें-पते-झलाह आयेंगे', पश्चात् उसका पियार नहीं आता; उसी प्रकार मूल शक्तिरूप द्रव्यको यथार्थ विश्वासपूर्वक ग्रहण करनेसे निर्मल पर्याय प्रगट होती है; द्रव्यमें प्रगटरूपसे कुछ दिखाई नहीं देता इसलिये विश्वास बिना 'क्या प्रगट होगा' ऐसा लगता है, परंतु द्रव्यस्वभावका विश्वास करनेसे निर्मलता प्रगट होने लगती है. ३०.**

'जब बीज बोते हैं...' ३०वां बोल है. 'जब बीज बोते हैं तब प्रगट रूपसे कुछ नहीं दिखता.' बीज बोते हैं तो तुरंत (इले) आ जाता है? आला..ला..! 'तथापि विश्वास है कि 'ईस बीजमेंसे वृक्ष उगेगा...' ईस बीजमेंसे वृक्ष उगेगा ही. उगेगा नहीं, उगेगा ही. आला..ला..! अंतरमें आत्माका बीज बोया,.. आला..! वह उगेगा ही. केवलज्ञान आये बिना रहेगा नहीं. षट्पञ्चांगममें ऐसा अंक बोल है कि, जब अंदरसे मतिज्ञान हुआ, स्वभावके अनुभवमेंसे जब मतिज्ञान हुआ तो मतिज्ञान ऐसा कहता है, मतिज्ञान केवलज्ञानको बुलाता है. ऐसा पाठ है. बुलाता है, ऐसा पाठ है. संस्कृत. षट्पञ्चांगम. मतिज्ञान केवलज्ञानको बुलाता है. यह क्या? उसका अर्थ यह है कि जो दृष्ट उगी है वह पूर्णिमा होगी ही. तेरहवें दिन पूर्णिमा होगी है. उसमें निःशंकाता है, कोई शंकाका स्थान नहीं. आला..ला..!

मुमुक्षु :- दृष्टका चंद्रमा है.

उत्तर :- वैसे यह भगवान् सम्यग्दर्शनरूपी दृष्ट उगी, केवलज्ञान इले बिना रहेगा नहीं. आला..ला..! क्या हो? मूल चीज पर (दृष्टि नहीं). चैतन्यमूर्ति निर्विकल्प वस्तु त्रिकाल निरावरण. वस्तु है वह तो त्रिकाल निरावरण है, अजंड है, अंक

है. ज्यसेनाचार्यकी टीका. ज्यसेनाचार्यकी टीकाका पाठ (है). त्रिकाव निरावरण. पाठ है, इसमें होगा. ज्यसेनाचार्यकी टीका है. आला..! वंभी बात है. क्या कला? सकल निरावरण. देओ!

पुनः स्पष्ट करनेमें आता है. विवक्षित अेकदेश शुद्धनयाश्रित, विवक्षित अेकदेश शुद्धनयाश्रित यह भावना जो कलना चाहते हैं, शुद्धरूप परिणति निर्विकल्प स्वसंवेदनलक्षण क्षयोपशमिक ज्ञानरूप होनेसे यद्यपि अेकदेश व्यक्तरूप है, तो भी ध्याता पुरुष यह भाता है कि जो सकलनिरावरण... संस्कृत टीका है. सकल निरावरण प्रभु अंदर है. आला..ला..! सकलनिरावरण अंजं अेक. गुणभेद नहीं. आला..ला..! सकल निरावरण अंजं अेक प्रत्यक्ष प्रतिभासमय. संस्कृतमें है, समयसार. समजमें आया? प्रत्यक्ष प्रतिभासमय अविनश्वर शुद्ध पारिणामिक परमभावलक्षण. शुद्ध पारिणामिक परमभावलक्षण निज परमात्मद्रव्य वही में हू. आला..ला..! समयसारकी ज्यसेनाचार्यकी टीकामें है. ज्यसेनाचार्यकी टीकामें है. शब्दशः विज विद्या है. आला..ला..! क्या करते हैं? देओ!

इसप्रकार सिद्धांतमें कला है, निष्क्रिय शुद्ध पारिणामिक. शुद्ध पारिणामिकभाव निष्क्रिय है. शुद्ध पारिणामिकभाव सक्रिय नहीं है, परिणामन नहीं है. पर्यायमें परिणामन है. निष्क्रियका क्या अर्थ है? क्रिया-रागादि परिणति उस रूप नहीं. मोक्षके कारणभूत क्रिया शुद्धभावना परिणति, उस रूप भी नहीं. सूक्ष्म बात है, प्रभु! द्रव्यरूप जो वस्तु है वह त्रिकाव निरावरण है, अंजं है, अेक है. मोक्षके कारणरूप भी नहीं. मोक्ष और मोक्षका कारण, दो रूप द्रव्य नहीं है. ऐसा पाठ है. आला..ला..! देओ! मोक्षके कारणभूत क्रिया शुद्धभाव परिणति उस रूप भी नहीं है. और ऐसा ज्ञाननेमें आता है कि शुद्ध पारिणामिक ध्येय ध्यानरूप नहीं है. आला..ला..! ध्यान विनश्वर है. पाठ है. ध्यान विनश्वर है, पाठ है. संस्कृत टीका है. ध्यान विनश्वर है, इसलिये ध्यानका ध्यान नहीं. आला..ला..! गजब बात है, भाई! ध्येयका ध्यान. आला..ला..!

योगीन्द्रदेवने भी कला है. योगीन्द्रदेवने (परमात्म प्रकाशमें) कला है.

ण वि उप्पज्जइ ण वि मरइ बंधु ण मोक्खु करेइ।

जिउ परमत्थेँ जोइया जिणवरु एउँ भणेइ।।६८।।

यह श्लोक है. हे योगी! अंतर स्वरूपमें जुडान करनेवालेको योगी कहते हैं. परमार्थसे जव उत्पन्न नहीं होता. परमार्थसे जव उत्पाद नहीं करता. उत्पाद-व्ययसे भिन्न है. उत्पाद-व्यय, ध्रुवके उपर तिरते हैं. आला..ला..! परमार्थसे जव उत्पन्न भी नहीं होता, भरता भी नहीं है. व्यय नहीं होता. उसका व्यय नहीं होता. व्यय

तो उत्पाद-व्ययका है. और बंध-मोक्षको करता नहीं. आला..ला..! पर्याय है न? पर्याय पर दृष्टि नहीं है. पाठ है. ज्यसेनाचार्यकी टीका, समयसारकी.

यहां कहते हैं, कौन-सा बोल आया? ३०. बीज बोया तो विश्वास है कि बीजमेंसे पत्ते, झूल, झूल सब होगा. सब होगा ही. वहां शंका होती है? 'जब बीज बोते हैं तब प्रगट रूपसे कुछ नहीं दिखता, तथापि विश्वास है कि 'ईस बीजमेंसे वृक्ष उगेगा, उसमेंसे डालें-पत्ते-झुलादि आर्येंगे', पश्चात् उसका विचार नहीं आता;...' आला..ला..! 'उसी प्रकार...' वह तो दृष्टांत हुआ. 'मूल शक्तिरूप द्रव्यको यथार्थ विश्वासपूर्वक ग्रहण करनेसे...' आला..ला..! ३०वां बोल. क्या कला? देजो! 'उसी प्रकार...' यानी जैसे बीज बोया और विश्वास है कि वृक्ष होगा ही. 'उसी प्रकार मूल शक्तिरूप द्रव्य...' मूल शक्तिरूप द्रव्य परमात्मा स्वयं. त्रिकाव निरावरण अखंडानंद प्रभु अेकरूप जो त्रिकाव, पर्यायमें अनेकरूप है, द्रव्यमें अेकरूप है, ओलो..लो..! जैसे अेक अखंड निरावरण परमपारिणामिकभाववक्षण निजपरमात्मद्रव्य वह मैं हूं. धर्मिको यह मैं हूं, ऐसा है. अंड ज्ञानका अनुभव नहीं है. आला..ला..!

वह यहां कहते हैं, 'द्रव्यको यथार्थ विश्वासपूर्वक ग्रहण करनेसे...' भगवान आत्मा द्रव्य पूर्णानंदका नाथ ध्रुव अचल, उसका आश्रय लिया.. आला..! उसे ग्रहण किया और निर्मल पर्याय प्रगट होती है. 'द्रव्यमें प्रगटरूपसे कुछ दिखाई नहीं देता...' पहले प्रतीत हुई अनुभवमें, उसमें असंख्य प्रदेश या अनंत गुण प्रत्यक्ष नहीं दिखाई देते. क्या कला? प्रगट पहले सम्यग्दर्शनमें अनुभव होता है. आनंदका स्वाद आता है, अतीन्द्रिय आनंदका. लेकिन असंख्य प्रदेश दिखते नहीं. ज्ञान कम है और अस्थिर है. असंख्य प्रदेश आदि. कहते हैं, वह पहले दिखाई नहीं देते. 'ईसलिये विश्वास बिना 'क्या प्रगट होगा'..' विश्वास ओलो..! बीजमेंसे वृक्ष होगा ही. वैसे मेरे आत्माका बीज-सम्यग्दर्शन हुआ, उसमेंसे केवलज्ञान होगा ही. भवभ्रमण कभी नहीं रहेगा, ऐसा अंदरमेंसे विश्वास न आये तो उसने आत्माको ज्ञाना नहीं. आला..ला..! ऐसी सूक्ष्म बात है, पंडितजी! अंतरकी बात है, भाई!

'क्या प्रगट होगा' ऐसा लगता है...' 'ईसलिये विश्वास बिना 'क्या प्रगट होगा' ऐसा लगता है, परंतु द्रव्यस्वभावका विश्वास करनेसे...' आला..! द्रव्यस्वभाव आत्माका विश्वास करनेसे 'निर्मलता प्रगट होने लगती है.' निर्मलता प्रगट होने लगती ही है. आनंदकी शुद्ध बढती ही है. द्रव्यका आश्रय हुआ, उसको द्रव्यके आश्रयसे शुद्ध उत्पन्न हुई, द्रव्यके आश्रयसे शुद्ध टिकी रही और द्रव्यके आश्रयसे शुद्धिकी वृद्धि हुई. आला..ला..! ऐसा मार्ग है. करना क्या? यह करना, यह करना...

करना क्या है? करनेमें भरना है. ज्ञानस्वप्नको रागादि करना बताना, भर गया. आला..ला..! क्या कला? फिरसे. ज्ञानस्वप्न तमगवान ज्ञानन-द्वेषन स्वभाव, उसको कुछ करना सौंपना, राग करना, पुण्य-पाप करना सौंपना, वहां ज्ञातापनेका नाश होता है. समझमें आया? आला..ला..!

ज्ञातापना, मैं ज्ञानस्वप्नका पिंड हूं, मेरी चीजमें कोई मैल-अशुद्धता कुछ नहीं है. ऐसी चीजका जब विश्वास हुआ वह इलेगा ही. आला..! द्रव्यस्वभावका विश्वास करनेसे निर्मलता प्रगट होगी. प्रगट हुआ बिना रहे नहीं. यह तो बलिनके वचनमें, अनुभवके वचन हैं. आला..ला..! रात्रिको थोडा ओले लोंगे. बलन आयी नहीं है, शरीरमें कमजोरी है. बोलते हैं थोडा, लेकिन बलनोंने विभ विया था. ईसलिये बाहर आया, नहीं तो बाहर नहीं आता. (उनकी स्थिति) शव जैसी है. आला..! यह तो उनकी वाणी है. यह सब उनके वचनामृत है. लो, उतना रभो...

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)